प्रकाशन तिथि : 15 नवम्बर, 2021
प्रेषण तिथि : 19 नवम्बर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 17 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'जिसका कुछ खो जाए, वह खुशी नहीं मनाता'

(दो सात दिवसीय व पांच चार दिवसीय शिविर संपन्न)

जब सारे भारतवर्ष में दीपावली की खुशी बांटने में लोग लगे हुए हैं, उसी समय आप कौम में चेतना जागृत करने का प्रयास करने के लिए यहां आए हैं। मातृस्वरूपिणी कौम की सेवा किस प्रकार की जाये, इसका चिंतन करने, समझने और अभ्यास करने के लिए आपने स्वयं को यहां प्रस्तुत किया इसीलिए आपके भाल पर तिलक लगाकर आपका स्वागत किया गया। दुनियां जिसमें खुशी मानती है वह हमारे लिए खुशी नहीं है, क्योंकि हमारा कुछ खो गया है। जिसका कुछ खो गया हो वह खुशी नहीं मनाता, उसमें कुछ उत्साह नहीं होता, उसके हृदय में आनंद नहीं होता, उदासी होती है। उपरोक्त बातें माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने गुजरात में सौराष्ट्र कच्छ संभाग में राजकोट प्रांत के गोंडल में आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में अपने

स्वागत उद्बोधन में कही।

उन्होंने कहा कि पूज्य तन सिंह जी ने दीपावली के दिन ही एक बंद अंधेरे कमरे में बैठकर समाज के लिए जब चिंतन किया तब उनके भीतर भी ऐसी ही उदासी थी। उसी प्रकार का चिंतन आपके जीवन में भी जागृत हो, समाज के लिए वैसी ही पीड़ा आपके हृदय में भी जागे, इसका प्रयास श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। दुनिया के सामान्य लोगों को पता नहीं है कि उनका क्या खो गया है? जिन लोगों को पता होता है कि उन्होंने कुछ खो दिया है वे हाथ पर हाथ धरकर बैठे नहीं रहते बल्कि खोई हुई वस्तु को ढूंढने अथवा पुनः प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें समझा रहा है कि हमारा क्या खो गया है? हमारा बलिदान, त्याग, संस्कार, परंपरा ही वह धरोहर है जो हमने खो दी है। उसी को ढूंढने का और संरक्षित करने का कार्य संघ कर रहा है। समाज हमारा माता-पिता है और हम उसकी संतान हैं। जब माता-पिता दुखी हो तब एक सपूत कैसे खुश रह सकता है? हम भी वही सपूत हैं जो समाज के दुख को अपना दुख मानकर उसे मिटाने की साधना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज बाहर सब जगह हमारी प्रेरणा को मिटाने का प्रयास हो रहा है, हमारे महापुरुष और हमारा इतिहास चुराने का षड्यंत्र चल रहा है। उसके प्रति हम सबको श्री क्षत्रिय युवक संघ जागृत कर रहा है कि हमारा गौरव, हमारी थाती कोई चुरा ना ले। हमने इसे सहेज कर नहीं रखा, इसमें वृद्धि नहीं की तो इसकी रक्षा नहीं हो सकेगी।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

समारोहपूर्वक भव्यता से मनेगी हीरक जयंती

22 दिसंबर 2021 को श्री क्षत्रिय युवक संघ 75 वर्ष का हो रहा है इसलिए यह पूरा वर्ष हीरक जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस वर्ष में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए लेकिन महामारी के कारण लगे प्रतिबंधों कारण बड़े समारोह को लेकर अनिश्चितता बनी हुई थी। 10 नवंबर को राजस्थान सरकार ने सभी प्रतिबंध हटाते हुए सार्वजनिक समारोह करने की अनुमति प्रदान की और उसी दिन संघ के संरक्षक माननीय भगवानसिंह जी रोलसाहबसर ने 22 दिसंबर 2021 को जयपुर में भव्य समारोह के रूप में हीरक जयंती मनाने का निर्णय कर लिया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

यह छात्रावास संघ के लिए तीर्थस्थल है: सरवड़ी

दीपावली के रोज आज आप यहां पधारे हैं। आपको बुलाया गया तो त्यौहार के दिन भी आप आए हैं, इसका मतलब आपके मन में भी एक भाव जगा है कि समाज की बात होती है तो हमें भी जाना चाहिए चाहे दीपावली का दिन ही क्यों ना हो। हम लोग यहां क्यों आए? हम लोगों ने यही स्थान क्यों चुना और वह भी दिवाली के दिन क्यों चुना? क्योंकि सन 1944 की दिवाली के ही दिन पूज्य तन सिंह जी के मन में एक स्फुरणा जगी थी जो आगे चलकर संघ के इस रूप में परिणत हुई। तन सिंह जी बाड़मेर जिले के थे। वे उस समय यहां 12 नंबर कमरे में रहते थे। जब चारों तरफ दिवाली का

उत्सव मनाया जा रहा था, लोग खुशियां मना रहे थे, दीपक चारों तरफ जल रहे थे, उस समय उनके मन में यह विचार जगा कि यह उजाला तो ठीक है लेकिन क्या इससे मेरे समाज में कोई प्रकाश फैलेगा? अगर मेरे समाज में प्रकाश नहीं फैले, मेरे समाज की आज जो स्थिति है उस स्थिति में कोई सुधार नहीं हो तो जो लोकतंत्र की बात की जा रही है, आजादी मिलने वाली है, जब लोकतंत्र आएगा तब मेरे समाज की क्या स्थिति होगी? 4 नवंबर को दीपावली के दिन पिलानी के श्री शार्दुल राजपूत छात्रावास में आयोजित स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक व श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि उनके हृदय में यह बात कोई अचानक पैदा नहीं हुई। यह संयोग था कि दीपावली के दिन प्रकाश देखकर समाज में भी प्रकाश फैलाने का संकल्प जगा। लेकिन उनके मन में समाज के प्रति प्रारम्भ से ही ऐसा भाव था। जब वे चौपासनी स्कूल जोधपुर में पढ़ते थे उस समय उन्होंने समाज की स्थिति पर प्रजासेवक पत्र में लेख लिखा था जिसे पढ़कर आयुवान सिंह जी उनसे प्रभावित हुए और उनको पत्र लिखा। इसके बाद दोनों का पत्र व्यवहार प्रारम्भ हुआ। वहां से हाई स्कूल करके वे 1942 में पिलानी पढ़ने के लिए आए। यहां उनके कुछ साथी ऐसे भी थे जिनके पास फीस देने के लिए पैसे नहीं थे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जिसका कुछ खो जाये, वह खुशी नहीं मनाता: बैण्यांकाबास

(पेज एक से जारी)

यहां आकर आपने समय का त्याग किया है, इस त्याग का फल समाज को मिलेगा। लेकिन यह त्याग तभी सार्थक होगा जब आप जागृत रहेंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन सात दिनों में आपको जो अभ्यास करवा रहा है वह क्षत्रियत्व की विकट साधना है। साध्य जितना महान होता है साधना उतनी ही कष्टप्रद और दीर्घकालिक होती है। हम जितना जागरुक होकर साधना में जुटेंगे उतनी ही शीघ्रता से हम लक्ष्य को पा सकेंगे। हमारे लिए पूज्य तनसिंह जी ने साधना का राजमार्ग बनाया है हमें बस उस पर निष्ठापूर्वक निरंतर चलते रहना है। जो चलेगा वही मंजिल पर पहुंचेगा। भोजराज जी राजपूत समाज भवन गोंडल में 7 से 13 नवंबर तक आयोजित इस शिविर में भावनगर, अवाणियां, मोरचंद, मुंबई, सूरत, पुणे, सुरेंद्रनगर आदि स्थानों के 113 राजपूत युवाओं ने संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस सात दिवसीय शिविर के अतिरिक्त 29 अक्टूबर से 01 नवम्बर की अवधि में पांच चार दिवसीय शिविरों का भी आयोजन हुआ। जोधपुर संभाग में जोधपुर शहर प्रान्त में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्भाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक के संचालन में राजपूत सभा भवन सांगरिया में सम्पन्न हुआ। शिविर में संभाग की विभिन्न शाखाओं से लगभग 100 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। देणोक ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि आपने यहां जो कुछ पाया है उसके रक्षण व पोषण का दायित्व आपका है। बाहर के विषमय वातावरण में यह अमृत की छोटी सी मात्रा तभी अपने अस्तित्व को बचा सकेगी जब आप यहां प्रारम्भ हुए अभ्यास को निरंतर जारी रखेंगे। शिविर में 31 अक्टूबर को माननीय संघ प्रमुख श्री का भी सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। उन्होंने शिविरार्थियों से नियमितता और निरंतरता बनाए रखने की बात कही। उन्होंने कहा कि अपनी ऊर्जा को बनाए रखने के लिए निरंतर शाखा में जाएं और नियमित अंतराल पर शिविर करते रहें। पूज्य तनसिंह जी की पीड़ा को घर-घर तक पहुंचाने का हमारा ही दायित्व है। इस दौरान स्थानीय निवासियों का स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख ने हीरक जयंती वर्ष के संबंध में जानकारी प्रदान की। इसी अवधि में मेवाड़ वागड़ संभाग का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर श्री बैणेश्वर धाम (हनुमंत सिंह जी सज्जन सिंह जी का गड़ा का फार्म हाउस, सत्तू की पादर) बांसवाड़ा में भँवर सिंह बेमला के संचालन में सम्पन्न हुआ। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि ध्येयनिष्ठा ऐसा गुण है जो असंभव को भी संभव कर देता है। इसलिए अपने ध्येय के प्रति पूर्ण समर्पित होकर कार्य करना चाहिए। शिविर में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ आदि जिलों से 121 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई कार्यक्रम में क्षेत्र के अन्य समाजबंधु भी सम्मिलित हुए। व्यवस्था में गुमान सिंह वालाई, हनुमंत सिंह सज्जन सिंह जी का गड़ा, शम्भु सिंह, लाखन सिंह, घनश्याम सिंह लाम्बापारडा, टैंकबहादुर सिंह व अरविंद सिंह गेंहुवाड़ा आदि का सहयोग रहा। इस दौरान वागड़ क्षत्रिय महासभा एवं समाज के प्रतिष्ठित सज्जनों की बैठक भी रखी गई जिसमें सभी ने संघकार्य में सहयोग देने की बात कही। साथ ही श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन एवं श्री प्रताप फाउण्डेशन के कार्यक्रम में सहभागिता निभाने पर भी चर्चा की गई। जालोर संभाग में भी एक प्रशिक्षण शिविर मेवी कलां स्थित महादेव मंदिर प्रांगण में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कहा कि इस अनूठे शिविर में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आप सभी को क्षात्र धर्म की शिक्षा दी जा रही है जो आज के इस भौतिक युग में नितांत आवश्यक है फिर भी उपेक्षित है। क्षात्रधर्म के पालन के लिए ही हमारे पूर्वज मर मिटे और जौहर व शाका जैसी अद्भुत परंपराओं को जन्म दिया। हम भी अपने रक्त की तासीर को पहचानकर अपने स्वधर्म का पालन करेंगे तो ही हमारे जीवन की सार्थकता है अन्यथा यह जीवन व्यर्थ ही बीत जाएगा। शिविर में भगोड़ा, भाणका, बागोल, मगरतलाव, पनोता, खिंवाड़ा, गुड़ा देवड़ा, माडपुर, गुड़ा आसकरण, बासनी, ईसाली, जोजावर, गुड़ा अजबा, मेवी कलां आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

बांसवाड़ा

गोंडल

जोगलसर

छैलसिंह, जसवंत सिंह, वनै सिंह मेवी कलां, श्रवणसिह, जितेन्द्र सिंह, भवानी सिंह बासनी व मानवेंद्र सिंह बागोल ने व्यवस्था में सहयोग किया। बालोतरा संभाग के पायला खुर्द गांव में भी इसी अवधि में शिविर का आयोजन हुआ। संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि जब तक हमारे समाज में एकता नहीं होगी तब तक समाज सबल नहीं बनेगा। हमारे समाज का सबल बनना केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र और मानवता के लिए भी आवश्यक है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज को एक सूत्र में बांधने के लिए लगातार ऐसे शिविरों का आयोजन कर रहा है। एकता की श्रृंखला में हम ऐसी मजबूत कड़ी बनकर जुड़ें जो किसी भी विपरीत परिस्थिति में अलग ना हो और ऐसे ही अन्य कड़ियों को भी इस श्रृंखला में हम जोड़ते जाएं तभी समाज के एक होने का स्वप्न पूरा होगा। शिविर में लगभग 135 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समस्त ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के बीदासर मंडल में श्री बैरसिंह नारायण सिंह मेमोरियल संस्थान, अड़ की औरण, जोगलसर में भी चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें गेडाप, गुन्दुसर, करेजड़ा, आसरासर, उटावड़, जोली, परावा, ज्याख, उंचाइड़ा, बोची, लिखमनसर, सागुबड़ी, नोड़ीया, रताऊ, टालनियाऊ, ढींगसरी, आसरवा सहित आसपास के अनेक गांवों से स्वयं सेवकों ने भाग लिया। शिविर का संचालन करते हुए विक्रम सिंह ढींगसरी ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने समाज में उर्ध्वगामी साधना की जो प्रक्रिया प्रारंभ की है उसमें सहभागी बनने का हमें अवसर मिला है, यह हमारा सौभाग्य है। पूर्ण जागृति एवं निष्ठा के साथ इस अवसर का लाभ उठाएं, यही हमारा कर्तव्य है। नरपतसिंह रताऊ, बलजीत सिंह नाथावतपुरा, जयसिंह सागुबड़ी, रुपसिंह परावा, महेन्द्र सिंह करेजड़ा व शार्दूल सिंह व्यवस्था व शिक्षण में सहयोग किया। 7 से 13 नवंबर तक ही गोंडल स्थित पटेल छात्रालय के परिसर में बालिकाओं का भी सात दिवसीय शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास ने बालिकाओं से कहा कि किसी भी कौम का गौरव उस कौम की स्त्रियों के त्याग, तपस्या और चरित्र पर टिका होता है। हमें ऐसी महान जाति में जन्म मिला हैं जिसमें स्त्रियों ने अपनी कुल मर्यादा की रक्षा करने के लिए बड़े से बड़े त्याग को भी छोटा कर दिखाया। आने वाली पीढ़ी को गौरव प्रदान करने के लिए उन्होंने जौहर जैसी अद्भुत परंपराएं कायम की। लेकिन आज वही गौरव नष्ट हो रहा है। हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान भौतिकवाद की दौड़ में खोती जा रही है। इसे बचाने का दायित्व श्री क्षत्रिय युवक संघ ने उठाया है और उसमें आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है। हमारे माध्यम से संघ समाज को पुनः खोया हुआ गौरव लौटाना चाहता है। हमारा सौभाग्य है कि इस महान यज्ञ में हमें भी आहुति देने का अवसर मिल रहा है। इस अवसर का पूरा लाभ उठाने के लिए संघ द्वारा सिखाई गई छोटी-छोटी बातों को निरंतर अभ्यास द्वारा अपने जीवन में उतारना आवश्यक है। शिविर में मेहसाणा, बनासकांठा, भावनगर, मोरचंद, कानेटी, गांधीनगर से बालिकाएं उपस्थित रही। शक्ति सिंह कोटड़ा नायाणी ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर दोनों शिविरों में व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

पायला खुर्द

सांगरिया

दीपावली स्नेहमिलनों से बढ़ा प्रेम, विश्वास और सद्भावना

दीपवली का अवसर पर आपसी प्रेम, विश्वास और सद्भावना के प्रसार का अवसर होता है। इस अवसर पर हम व्यक्तिगत रुप से जहां एक दूसरे से मिलते हैं वहीं सामाजिक संस्थाएं भी स्नेहमिलनों के माध्यम से समाज में प्रेम, विश्वास और सद्भाव का विस्तार करती है। इस दीपावली के अवसर पर भी ऐसे ही स्नेहमिलनों की भरमार रही। बीकानेर शहर में रहने वाले संघ के स्वयंसेवकों के दीपावली स्नेह मिलन का आयोजन 4 नवंबर को हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक उम्मेद सिंह सुल्ताना, चूरू प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर आदि ने सांघिक कार्य और दीपावली विषय पर अपने विचार रखे। संभाग प्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ प्रांत में श्री दाता साहब राजपूत छात्रावास भोपालगढ़ में भी दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम 7 नवम्बर को आयोजित हुआ। प्रांतप्रमुख भरत पाल सिंह दासपां ने उपस्थित समाजबंधुओं को पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया तथा संघ की स्थापना की पृष्ठभूमि बताते हुए हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत आयोजित हो रही गतिविधियों से अवगत कराया। बीकानेर में चक 68 एन पी स्थित श्री करणी जी मंदिर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का दीपावली स्नेह मिलन 6 नवंबर को आयोजित हुआ। प्रांत प्रमुख शक्ति सिंह आशापुरा ने उपस्थित समाजबंधुओं को पूज्य श्री तन सिंह जी का परिचय दिया तथा कहा कि हीरक जयंती वर्ष के अंतर्गत संघ विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रमों का आयोजन करके समाज के प्रत्येक हिस्से तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है। हमारे जीवन मूल्यों, परंपराओं और आदर्शों को अपनाना ही हमारे विकास एवं सुखी जीवन का आधार बन सकता है इसीलिए संघ हमारी युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के पश्चात संघ साहित्य का वितरण भी किया गया। स्थानीय समाज बंधुओं के अतिरिक्त अनोपगढ़, विजयनगर व रायसिंहनगर से भी समाज बंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। 4 नवंबर को दक्षिण मुम्बई प्रान्त द्वारा महाराणा प्रताप हॉल भूलेश्वर में दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन

बीकानेर

चितलवाना

किया गया। शम्भूसिंह धीरा द्वारा संघ और पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया गया। महाराष्ट्र सम्भाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाना ने क्षत्रिय का अर्थ बताते हुए गीता में वर्णित क्षत्रिय के सात गुणों का वर्णन किया तथा यथार्थ गीता के संबंध में जानकारी दी। अनोपसिंह करड़ा ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों व शाखाओं में जो संस्कार दिए जा रहे हैं वे समाज जागरण के श्रेष्ठतम साधन हैं। कार्यक्रम में लगभग 130 की संख्या में समाज बन्धु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख देवीसिंह झलोड़ा द्वारा किया गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन आशापुरा माताजी मंदिर नाडोल (पाली) में किया गया।

अंबिका बाणेश्वरी संस्थान प्रतापगढ़ द्वारा दीपावली स्नेहमिलन समारोह किला परिसर राजपूत हॉस्टल, प्रतापगढ़ में रखा गया। संस्थान के अध्यक्ष दिग्विजय सिंह चिकलाड़ ने स्वागत भाषण में संस्था की रूपरेखा समाज के सामने प्रस्तुत की और समाज के भामाशाहों से आह्वान किया कि इस महायज्ञ में सभी अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि युवा उद्योगपति, समाजसेवी व भामाशाह भीम सिंह चुंडावत ने अपने उद्बोधन में समाज को एक माला में पिरोकर संगठित करने की बात कही और गरीब छात्राओं के लिए बन रहे छात्रावास निर्माण हेतु सहयोग देने की घोषणा की। उप जिला प्रमुख चित्तौड़गढ़ भूपेंद्र सिंह बडोली ने भी छात्रावास निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा बालिका शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया। महावीर सिंह साटोला (पूर्व प्रधान छोटी सादड़ी) ने भी शिक्षा पर जोर देते हुए सहयोग देने का वचन दिया। पेंशन विभाग में एडिशनल कमिश्नर विश्वजीत सिंह जाजली ने छात्राओं से आह्वान किया कि अधिक से अधिक सरकारी नौकरी की तैयारी करें। कोचिंग क्लास व्यवस्थित रूप से चले इसके लिए उन्होंने संस्थान को सहयोग देने का आश्वासन दिया। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के महामंत्री मदन सिंह घटेला ने भी संस्थान को सहयोग प्रदान करने व तन-मन-धन से संस्थान के साथ रहने का आह्वान किया। भामाशाह के रूप में योगेंद्र सिंह लीमबरवाड़ा, युवा मेवाड़ क्षत्रिय महासभा धरियावद, प्रताप स्मारक समिति के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह चौहान, राठौर नर्सिंग होम दलोट के डॉक्टर हेमंत सिंह, संस्थान के पदाधिकारी दिग्विजय सिंह कुलथाना, महिपाल सिंह चौहान बोरदिया ने आर्थिक सहयोग की घोषणा की। बालक बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए तथा संस्थान द्वारा प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। हॉस्टल में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले सदस्यों, हॉस्टल निर्माण देखरेख समिति के पदाधिकारियों व कार्यक्रम में सहयोग करने वाले प्रभारियों का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में प्रतापगढ़ से सैकड़ों की संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। सांचोर (जालोर) के चितलवाना गांव में 7 नवंबर को राजपूत समाज का दीपावली स्नेहमिलन व प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। हाड़ेचा महंत कैलाश पुरी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विरेंद्र सिंह, राव मोहन सिंह चितलवाना, ईश्वरसिंह कारोला, राव लोकेंद्र सिंह, देवीसिंह सुराचंद, सरवाना थानाधिकारी शैतान सिंह, नर्मदा नहर परियोजना अधिशाषी अभियंता मदन सिंह राठौड़, हड़मत सिंह देवड़ा, गजेंद्र सिंह कारोला सहित अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चितलवाना प्रधान प्रतिनिधि हिन्दुसिंह दूठवा ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के दौर में शिक्षा आज की पहली आवश्यकता है। शिक्षा के बिना समाज और व्यक्ति का विकास अधूरा है। स्नेहमिलन को चंदन सिंह विरोल, राम सिंह चारणीम, महेंद्र सिंह झाब, शैतान सिंह भूतेल, महावीर सिंह दातिया, खंगार सिंह कारोला, प्रेम सिंह, करन सिंह अचलपुर सहित कई जनों ने संबोधित किया तथा बालिका शिक्षा, नशामुक्ति समेत कई सामाजिक मुद्दों पर विचार प्रकट किए तथा राजनीति में संगठित होकर रहने की बात कही। इस दौरान 10वीं, 12 वीं, स्नातक, राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों सहित राजकीय सेवा से चयनित प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। राजपूत समाज जोबनेर का दीपावली स्नेह मिलन जोबनेर में आयोजित हुआ। संग्राम सिंह मनोहर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति डॉ प्रवीण सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समाज को आर्थिक रूप से सबल बनने के लिए कृषि के क्षेत्र में शिक्षा तथा आय बढ़ाने के उपायों पर चिंतन करना चाहिए। प्रोफेसर राजेंद्र सिंह खंगारोत ने प्रशासनिक सेवाओं में समाज के युवाओं को आगे बढ़ाने की आवश्यकता जताई तथा डॉक्टर सुगन सिंह मनोहर ने बालिका शिक्षा को समाज की प्रगति के लिए आवश्यक बताया। बालक बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई तथा प्रतिभागियों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन दीपा पब्लिक स्कूल की निदेशक पंकज राठौड़, दीक्षिता राठौड़ व संजना राठौड़ द्वारा किया गया। 6 नवंबर को श्री सबल सिंह राजपूत सेवा सदन फलसूंड में भी दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। यहां पिछले 3 वर्षों से लगातार दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में लाखन सिंह, मदन सिंह, राजू सिंह, आनंद सिंह, मोती सिंह व अर्जुन सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए तथा समाज के युवाओं को अच्छे संस्कार व इतिहास की जानकारी देने की बात कही। सीकर में श्री कल्याण राजपूत छात्रावास के पूर्व छात्रों का स्नेह मिलन कार्यक्रम 7 नवंबर को छात्रावास परिसर में संपन्न हुआ। मुख्य वक्ता चितरंजन सिंह राठौड़ ने कहा कि कोई समाज अथवा राष्ट्र तभी प्रगति कर सकता है जब उसके नागरिक सुशिक्षित हो। ऐसे ही समाज और राष्ट्र का भविष्य उज्जवल बन सकता है। सीकर के तत्कालीन राव राजा कल्याण सिंह की ओर से 1961 में यह छात्रावास प्रारंभ किया गया था। इसके पीछे समाज को शिक्षित करने की उनकी दूरगामी सोच ही आधार बनी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सीकर

खींवसर

संपादकीय

राजनीति और अंधी प्रतिस्पर्धा

राज करने की नीति राजनीति कहलाती है और राज का संबंध सत्ता से होता है। सत्ता शक्ति पैदा करती है और शक्ति सामर्थ्य पैदा करती है। सामर्थ्य व्यक्ति को वह प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाता है जो वह चाहता है इसलिए हर व्यक्ति राजनीति में रुचि रखता है और उसकी वह रुचि उसे सत्ता सुंदरी के आकर्षण की ओर आकर्षित करती है। इसलिए सत्ता को मोहिनी कहा जाता है जो हर व्यक्ति को मोहने की शक्ति रखती है। बिरले ही लोग होते हैं जो इस मोहिनी के निकट संपर्क में रहकर भी महाराजा जनक की तरह मोहपाश से मुक्त हो पाते हैं, शेष तो इसी मोहपाश में आबद्ध होकर रक्त स्नान तक करते रहे हैं और इसके अनगिनत उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं।

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह सुंदरी बाहुबली की अपेक्षा जनबली का वरण करती है और इसीलिए इसको हासिल करने हेतु राजनेता जनबल को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश करते हैं और ऐसे में उनमें प्रतिस्पर्धा होना स्वाभाविक है। किसी एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए बहुत सारे दावेदार हों तो उनमें प्रतिस्पर्धा होना स्वाभाविक है और इस स्वाभाविकता को नजरंदाज करना वास्तविकता से आंखें मूंदना है। राजनीति में काम करने वालों में प्रतिस्पर्धा नहीं होगी ऐसा संभव नहीं है और इसीलिए हमें इस प्रतिस्पर्धा को स्वाभाविक प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार करना चाहिए, कोई चाह कर भी इसे मिटा नहीं सकता और मिटाने की बात करना भी अस्वाभाविक बात है। हमारे समाज के राजनेताओं में भी यह स्वाभाविक प्रतिस्पर्धा पायी जाती है और हमारे ही नहीं बल्कि सभी समाजों के राजनीतिक लोगों में यह प्रतिस्पर्धा पायी जाती है।

भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जाति सबसे बड़ा दबाव समूह है, सभी राजनीतिक दलों में अधिकांश संगठनात्मक नियुक्तियां जाति के आधार पर होती हैं, पार्षद से लेकर सांसद तक की टिकटें जाति के आधार पर मिलती है, वोट जाति के आधार पर पड़ते हैं, मंत्री जाति के आधार पर बनते हैं और अधिकारियों की नियुक्ति और स्थानांतरण भी जाति के आधार पर होते हैं, इसलिए जाति हमारे यहां व्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक है और यह भी वास्तविकता है कि सभी काम जाति के आधार पर करने वाले राजनेता जाति के खिलाफ सबसे अधिक बाते करते हैं। लेकिन हम तो बात प्रतिस्पर्धा की कर रहे हैं कि प्रतिस्पर्धा राजनीति की वास्तविकता है और जाति राजनीति का महत्वपूर्ण घटक है। अतः एक ही जाति के राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच भी पर्याप्त प्रतिस्पर्धा होती है, हमारी जाति के राजनेताओं के बीच भी प्रतिस्पर्धा है। यह प्रतिस्पर्धा जब अंधी हो जाती है तब हमें राजनीतिक दलों के समक्ष यह दावे करने को प्रेरित करती है कि अमुक विधानसभा में राजपूतों के वोट कम है इसलिए वहां से टिकट नहीं मिलनी चाहिए बल्कि हमारी विधानसभा में ज्यादा राजपूत हैं इसलिए हमारे जिले में वहां नहीं यहां टिकट दी जानी चाहिए। यह जब अंधी हो जाती है तब ही तो हमारे स्थापित राजनेताओं द्वारा हमारे समाज के किसी व्यक्ति को किसी राजनीतिक पार्टी का अध्यक्ष बनाने की बात का पुरजोर विरोध किया जाता है और यहां तक कह दिया जाता है कि राजपूत को अध्यक्ष बनाने से अमुक वर्ग नाराज हो जाएगा लेकिन जब उसी वर्ग का अध्यक्ष बनाया जाता है तब वे पार्टी हित?? में उसे सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। इस प्रतिस्पर्धा के अंधा होने का ही परिणाम है कि हमारे नवोदित राजनेता इस बात से सदैव आशंकित रहते हैं कि उनके क्षेत्र में हमारे ही समाज का कोई राजनेता राजनीति न करने लगे और इसीलिए अपनी ही पार्टी में अपने उस स्वजातीय बंधु की जड़ें कमजोर करने को उद्यत रहते हैं। इस अंधी प्रतिस्पर्धा का ही परिणाम है कि हमारे राजनेता उनकी पार्टी के नेतृत्व को अपने क्षेत्र के स्वजातीय प्रतिनिधि के विरुद्ध सार्वजनिक पत्र लिखने में भी शर्म महसूस नहीं करते। यही अंधी प्रतिस्पर्धा किसी क्षेत्र विशेष में स्थापित नेतृत्व को अपने स्वजातीय बंधुओं को राजनीति में लाने से रोकती ही नहीं बल्कि कोई अपने पुरुषार्थ से आने का प्रयास करे तो बहुत छोटे स्तर से ही उसे येन केन प्रकारेण रोकने को प्रेरित करती है। जब व्यक्ति प्रतिस्पर्धा में अंधा होता है तब ही तो वह अपने प्रतिस्पर्धी को येन केन प्रकारेण नुकसान पहुंचाना शुरू करता है और उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त ऐसे भी शर्मनाक उदाहरण हैं जब हमने देखा कि हमारे समाज राजनीतिक कार्यकर्ता एक दूसरे के जेल जाने के बदोबस्त करने में संलग्न थे या जेल जाने पर बधाईयां भी बांट रहे थे।

यह प्रतिस्पर्धा जब अंधी होती है तो केवल राजनीति तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि सामाजिक क्षेत्र में भी अपना भरपूर कबाड़ा करती है। किसी सामाजिक बैठक में अमुक को क्यों बुलाया या अमुक को क्यों नहीं बुलाया, ऐसे प्रश्न ऐसी अंधी प्रतिस्पर्धा ही खड़े करती है। उनकी नजर में सामाजिक बैठकें भी राजनीति का अखाड़ा बन जाती हैं और उनकी वह प्रतिस्पर्धा बेनकाब होकर नंगी हो जाती है, क्योंकि वे तो उसके अंधेपन से प्रभावित होते हैं इसलिए समझ नहीं पाते पर शेष लोग उस नंगेपन को देखते ही नहीं बल्कि देखकर उन महाशय का आकलन भी कर लेते हैं कि ये कितने पानी में हैं? इस स्थिति में उनकी वह स्वाभाविक प्रतिस्पर्धा अंधी होकर केवल समाज के लिए ही घातक नहीं होती बल्कि उनके स्वयं के लिए भी घातक बन जाती है। वे अपने स्वजातीय राजनेता के खिलाफ माहौल बनाकर उसकी रेखा को छोटा करने का प्रयास कर यह सोचते हैं कि वे स्वयं की रेखा को लंबा सिद्ध कर रहे हैं लेकिन कालांतर में वे पाते हैं कि जिन तरीकों से उन्होंने अपने स्वजातीय प्रतिस्पर्धी की लाईन को छोटा किया था वे ही तरीके उनके विरोधी उनकी रेखा को छोटा करने में उपयोग कर रहे हैं। जो उनका प्रतिस्पर्धी था, विरोधी नहीं था, उसको मिटाकर वे स्वयं पनपने के भ्रम में उनको पनपा देते हैं जो उनके प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि विरोधी होते हैं। यह पूरा विवरण एक वस्तुस्थिति का वर्णन है जो हमारे समाज के राजनेताओं के साथ काम करते हुए सहज ही महसूस किया जा सकता है और हमारे समाज की राजनीतिक भागीदारी को कमजोर करने में यह एक बड़ा कारण सिद्ध होता जा रहा है। इस अंधी प्रतिस्पर्धा ने हमारे समाज के राजनेताओं के आपसी विश्वास और समझ को इतना क्षीण कर दिया है कि वे समान हितों वाले विषयों पर भी एक दूसरे को आशंकित नजरों से देखते हैं और साथ आने से कतराते हैं। इस स्थिति के कारण ना तो उनके स्वयं के हित सध पाते हैं और ना ही वर्तमान व्यवस्था में समाज की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित हो पाती है। लेकिन इस वास्तविकता को स्वीकार करना ही मात्र उपाय नहीं है बल्कि इस वास्तविकता को सुधारना ही एक मात्र उपाय है। इसके लिए इन सब राजनेताओं की आपसी समझ और विश्वास को बढ़ाना पड़ेगा और इसका एक मात्र उपाय है आपसी संवाद। सौहार्दपूर्ण माहौल में ईमानदारी के साथ संवाद और इस संवाद के लिए इन्हें समाज ही मजबूर कर सकता है। समाज का सामाजिक नेतृत्व जब मजबूत होगा तो वह इनको साथ बिठा पायेगा, इनके अवास्तविक भयों को दूर कर पायेगा, मिथ्या भ्रमों को दूर कर उनके कारण बढ़ी दूरियों को पाट सकेगा। इसलिए हम जो समाज के आम मतदाता हैं, समाज की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावी बनाने के लिए चिंतित हैं, उसके लिए कुछ करना चाहते हैं उनको चाहिए कि समाज के सामाजिक नेतृत्व को मजबूती प्रदान करें। श्री प्रताप फाउंडेशन इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए कर्मशील है, आयें हम इस आवश्यकता को समझें और उसकी पूर्ति हेतु श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों को मजबूती प्रदान करने में अपना यथाशक्ति एवं यथायोग्य सहयोग अर्पित करें।

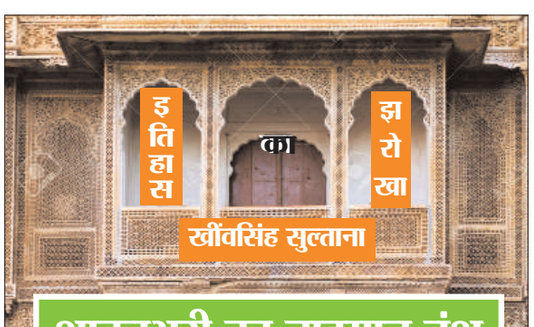

शाकम्भरी का चाहमान वंश

पृथ्वीराज प्रथम के बाद उसका पुत्र अजयराज शासक बना। 'पृथ्वीराज विजय' और 'बिजौलिया लेख' से अजयराज की उपलब्धियों के बारे में पता चलाता है। अजयराज एक कुशल योद्धा, महान विजेता और श्रेष्ठ प्रशासक था। 'पृथ्वीराज विजय' ग्रन्थ से पता चलता है कि अजयराज ने मालवा पर आक्रमण किया और विजय प्राप्त की। युद्ध में परमार नरेश नरवर्मा के सेना नायक सुल्हण को परास्त कर बंदी बना कर ले आया। बिजौलिया लेख के अनुसार श्रीमार्ग (वर्तमान बयाना) दुर्द (बुन्देलखण्ड का क्षेत्र) पर विजय प्राप्त की। मथुरा और उसके आसपास के क्षेत्र से अजयराज की रजत मुद्राएं प्राप्त हुई है जो इस बात को सिद्ध करती है कि अजयराज के समय वहां तक शाकम्भरी के चाहमान साम्राज्य का विस्तार था। पृथ्वीराज विजय से पता चलता है कि अजयराज ने तुर्कों के आक्रमण को अनेकों बार विफल किया। मिन्हाज-उल-सिराज लिखता है कि गजनी के शासक बहरामशाह ने भारत पर अनेक बार आक्रमण किए और जब उसका संघर्ष अजयराज के साथ हुआ तो चाहमान शासक ने उसे परास्त कर पीछे धकेल दिया। 'प्रबन्धकोश'के अनुसार अजयराज ने तुर्क शासक सुल्तान शहाबुद्दीन को भी परास्त किया था। अजयराज ने अजमेर नगर की स्थापना की और उसे शाकम्भरी के चाहमान साम्राज्य की राजधानी बनाया। अजयराज एक महान निर्माता था, उसने नवस्थापित राजधानी अजमेर को भव्य भवनों से अलंकृत करवाया। अजमेर में उसने एक विशाल टकसाल का निर्माण करवाया, जिसमें विविध प्रकार के सिक्के ढाले जाते थे। अजयराज और उसकी राजमहिर्षी सोमल्लदेवी की बहुसंख्यक अलग-अलग प्रकार की रजत मुद्राएं प्रकाश में आई है जो अजयराज के समय चाहमान साम्राज्य की समृद्धि के बारे में बताती है। अपने जीवनकाल के उत्तरार्द्ध में अजयराज ने अनेक प्राचीन शासकों की तरह, अपने पुत्र के पक्ष में सिंहासन त्याग दिया और स्वयं ने अपने जीवन का अंतिमसमय में पुष्कर तीर्थ में तपस्या करते हुए व्यतीत किया। निःसंदेह अजयराज शाकम्भरी के चाहमान वंश का एक महान शासक था। अजयराज का उत्तराधिकारी उसका पुत्र अर्णोराज हुआ, जिसने 1130 ई. से 1150 ई. तक शासन किया। अर्णोराज भी अपने पिता अजयराज की भांति वीर, कुशल यौद्धा व श्रेष्ठ शासक था। लेखों में अर्णोराज की उपलब्धि 'महाराजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक' मिलती है जिससे पता चलता है कि वह एक शक्तिशाली शासक था। 'पृथ्वीराज विजय' और अन्य साहित्यक ग्रन्थों से पता चलता है कि अर्णोराज ने अजमेर पर आक्रमण करने वाले तुर्क सुल्तान को परास्त किया और उसकी सेना का संहार किया। ग्रन्थों से पता चलता है कि इस विजय पर अजमेर में प्रजा द्वारा उत्सव मनाया गया और युद्ध स्थल पर बहे तुर्कों के रक्त से पृथ्वी को शुद्ध करने के लिए अर्णोराज द्वारा आना सागर झील का निर्माण करवाया गया। बिजौलिया लेख से पता चलता है कि अर्णोराज ने मालवा पर आक्रमण किया और मालवा के परमार शासक नरवर्मा को परास्त किया। अर्णोराज शैव मतानुयायी था और उसने पुष्कर में वाराह मंदिर का निर्माण करवाया। अर्णोराज एक कुशल प्रशासक था और सदैव प्रजा के कल्याण में रत रहता। राज्य लोभ में अर्णोराज के ज्येष्ठ पुत्र जगदेव ने उनकी हत्या कर दी थी।

(क्रमशः)

लाडनूं में राव केशरी सिंह जोधा का स्मृति समारोह

नागौर जिले के लाडनूं परगने के प्रथम जोधा शासक राव केशरीसिंह जोधा की स्मृति में 6 नवंबर को लाडनूं स्थित करणी निवास में एक स्मृति समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के प्रारंभ में राव केशरीसिंह जी के इतिहास की जानकारी देते हूए समारोह के संचालक रविंद्र सिंह लाडनूं ने बातया कि वे राव मालदेव के पोते व सिवाना के प्रसिद्ध शासक कल्ला रायमलोत के पुत्र नरसिंह दास जी के पुत्र थे। उनको नागौर के शासक राव अमरसिंह ने लाडनूं का शासक नियुक्त किया था, इससे पहले वे खाटू के जागीरदार थे। उल्लेखनीय है कि वे गजसिंह जी जोधपुर के सहयोगी के रूप में शाहजहां के यहाँ नौकरी करते थे। एक बार सलावत खां ने उन्हें काबुल जाने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया कि मैं मारवाड़ का सेवक हूं, बादशाह का नहीं। इस बात को लेकर उन्हें शाहजहां का दरबार छोड़ना पड़ा और उनकी मनसब छीन ली गई। राव अमरसिंह जी ने उन्हें नागौर में अपने पास रखा और कालांतर में लाडनूं सौंपा। उसके बाद नागौर व बीकानेर राज्य के बीच सीमावर्ती किसानों के विवाद और अस्तित्व को लेकर हुए संघर्ष में वे वीरगति को प्राप्त हुए। उनके वंशज आज लाडनूं, डीडवाना, जायल, नागौर आदि क्षेत्रों के 84 गांवों में बसे हुए हैं। उन सबके सहयोग से यह स्मृति

समारोह आयोजित किया जा रहा है और इस कार्यक्रम में सभी गांवों के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं। कार्यक्रम में गजेंद्र सिंह ओड़िंट, जितेंद्र सिंह सांवराद, राजेन्द्रसिंह धोलिया, श्यामप्रताप सिंह रुंवा, किशोरसिंह ज्याणी, पदमसिंह रोडू, रघुवीर सिंह, सुमेरसिंह सींवा, रतनसिंह सांडवा आदि ने विभिन्न समसामयिक व ऐतिहासिक विषयों पर अपने विचार रखे। नांद स्थित गौशाला के संचालक संत समता राम ने कहा कि जीवन की सभ्यता और संस्कृति संघर्ष और समर्पण से समृद्ध होती है। उन्होंने भारत की मूल क्षात्र संस्कृति की ओर लौटने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़ने का आह्वान किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात करते हुए उपस्थित समाज बंधुओं को बताया गया कि हमारे पूर्वजों का कर्तव्य बोध उनकी महानता का कारण है और उस महानता को हमारे जीवन में उतारने के लिए पूज्य तनसिंह जी ने हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग प्रदान किया है। हमारा पुरुषार्थ हमें उस मार्ग पर प्रशस्त करेगा। बताया गया कि हमें राव केशरीसिंह जी से यह सीख लेनी चाहिए कि हम हमारे नेता के नेतृत्व में सर्वत्र काम करने को तैयार रहें लेकिन कोई सलावत खां हमारा संचालन नहीं कर सकता। हमें केशरीसिंह से पीछे लौटकर कल्ला जी रायमलोत तक भी जाना चाहिए, राव चंद्रसेन तक भी जाना चाहिए और ऐसे ही पीछे लौटते हुए हमारे सभी महान पूर्वजों के जीवन मूल्यों को समकालीन परिप्रेक्ष्य में हमारे जीवन में अपनाना चाहिए। संघ हमारी ऐसी चाह का सदैव स्वागत करने को आतुर है। कार्यक्रम में लाडनूं के पूर्व विधायक मनोहर सिंह जी का मार्गदर्शन व सानिध्य मिला। अंत में उनके पुत्र करणीसिंह ने आभार व्यक्त किया।

डूंगजी जवाहर जी व बलजी भूरजी स्मृति पुरस्कार समारोह

नसीराबाद की अंग्रेज छावनी को लूटकर और आगरा में अंग्रेजों की जेल को तोड़कर अंग्रेज सत्ता के खिलाफ जनता की आवाज बनने वाले डूंगजी जवाहर जी व अंग्रेजों की फौज में भारतीयों का अपमान करने वाले अफसर को मारकर जनता में स्वाभिमान की अलख जगाने वाले बलजी भूरजी और उनके सहयोगियों लोठ्याजी, गणेशाजी, सामता जी आदि की स्मृति में सीकर जिले के पाटोदा गांव में द्वितीय स्मृति पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। विगत वर्ष प्रारंभ किए गये इन पुरस्कारों में इस वर्ष डूंगजी जवाहर जी पुरस्कार स्व. गोविंद सिंह पाटोदा को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर गांव का नाम रोशन करने के लिए मरणोपरांत उनकी धर्मपत्नी को दिया गया वहीं बलजी भूरजी पुरस्कार गांव के राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ता जयप्रकाश इंदोरिया को दिया गया। गणेशा जी पुरस्कार बदरी पुजारी को गांव के पुराने ठाकुर जी मंदिर के जीर्णोद्धार में सहयोग करने व गांव के अन्य सार्वजनिक स्थलों के रखरखाव में सहयोग करने के लिए दिया गया। लोठ्याजी जी पुरस्कार नवचयनित कनिष्ठ नगर नियोजक कमल सिंह को वहीं सामता जी पुरस्कार गांव के विद्यालय में सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाली मनीषा डोटासरा को दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने गांव के गौरवशाली पूर्वजों को याद करते हुए उनके त्याग और परहित कातरता से प्रेरणा लेने की बात कही एवं सर्वसमाज की भागीदारी से आयोजित हुए इस कार्यक्रम को सराहनीय बताया।

झाड़ली में मनाई गोवर्धन दास जी की जयंती

सीकर जिले के झाड़ली निवासी राजपूतों ने अपने पूर्वज गोवर्धन दास जी की जयंती 7 नवंबर को शोभायात्रा निकाल कर समारोह पूर्वक मनाई। इस अवसर पर समाज की प्रतिभाओं, समाज सेवियों, सेवानिवृत्त समाज बंधुओं का सम्मान किया गया। उल्लेखनीय है कि गोवर्धन दास जी राव शेखा जी की पांचवीं पीढ़ी में हुए थे। इनको 1715 में अपने पिता के पांच गांवों में से झाड़ली गांव जागीर में मिला, तब से इनके वंशज इसी गांव में निवास करते हैं। गोवर्धन दास जी खंडेला की सेना के सेनापति थे। इन्होंने झाड़ली में गढ़ी का निर्माण करवाया जिसे आज बड़ा दरवाजा कहा जाता है। इसके अलावा इन्होंने गोपीनाथ जी का मंदिर, बुर्ज, कुए व बावड़ी का भी निर्माण करवाया था।

आदरणीय, मेरे प्यारे राजपूत भाइयों एवं बहिनों आपको जानकार अत्यन्त खुशी होगी कि आपका भाई जंगली जड़ी-बूटियों से इलाज कर अनेक रोगों से ग्रसित लोगों को रोग मुक्त कर रहा है। मेरे पास रोगी रोग मुक्त हो रहे है। **मैं भंवरसिंह शक्तावत निवासी बेजनाथिया पोस्ट नेतावल महाराज तहसील व जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)** आप राजपूत भाइयों एवं बहिनों को सेवा देना चाहता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि अपने समाज के अनेक लोग अत्यन्त दयनीय परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में इलाज कराने में असमर्थता हो रही है। यदि आप मुझ से सेवाएं लेना चाहें तो कृपया निम्नलिखित रोगों के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।

कैंसर का इलाज विशेष तौर से किया जाता है। दाद, पथरी, श्वास रोग, लकवा, मोटापा कम करना, मस्सा (बवासीर), एलर्जी, पुरानी मार।

सम्पर्क सूत्र : **भंवरसिंह शक्तावत,** मो. 82902-16781

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449

जय श्री बॉयज हॉस्टल

BEST FOR | 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target

CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

भवानी सिंह

हार्दिक बधाई

रविन्द्र सिंह

प्री BSTC परीक्षा में **भवानी सिंह सुरावा** का 422 अंकों से एवं **रविन्द्र सिंह तावीदर** का 434 अंकों से चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं!

शुभेच्छु

भरत सिंह सेवाड़ा, पुष्पेन्द्र सिंह आसाणा, महिपाल सिंह पुनासा, नरेन्द्र सिंह सेवाड़ा, हितपाल सिंह सेवाड़ा, रविन्द्र सिंह रतनपुर, महावीर सिंह मेड़क, देवी सिंह रतनपुर, अनुपाल सिंह पुनासा, दिग्पाल सिंह डुंगरपुर, राजेन्द्र सिंह सच्चिया, नरेन्द्रसिंह नारणाबास।

अलख नयन
आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute

विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं

मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि

'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

31 अक्टूबर को रविवारीय केन्द्रीय शाखा में पूज्य तन सिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 316 पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि साधारणतया संघर्ष या विरोध को हम अशुभ मानते हैं जबकि संघ का यह अनुभव है कि विरोध के बाद हमारे कार्य में गति ही आई है। कई बार परिश्रम एवं निरन्तर संघर्ष के बाद भी परिणाम अनुकूल नहीं आते है। अनजाने, अतिमानस एवं दैविक कारण होते हैं जो हमारे दिशादर्शन को दूसरी ओर खींच ले जाते हैं। भूलवश हम उन्हें विरोधी कारण मान लेते हैं। हमें सदैव ऐसा मानना चाहिए कि अज्ञात परिस्थितियाँ जो अवरोध के रूप में आती हैं वे हमारे हित के लिए ही होती है। साधना में विरोध या संघर्ष साधक को कुछ न कुछ सीखा कर जाता है। विरोध से हमारी सहनशक्ति मजबूत होती है और धीरे-धीरे स्थिति यह आ जाती है कि हमारा धैर्य विरोध के कारण को ही समाप्त कर देता है। आगे उन्होंने स्वयंसेवकों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा कि अनुभव से ही यह विश्वास पैदा होगा कि विरोध हमें निखारने के लिए है और प्रत्येक विरोध धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। यद्यपि विरोध करने वाले की बात पर चिंतन जरूर करना चाहिए। यदि विरोधी निराधार विरोध कर रहा है तो हमें ध्यान नहीं देना चाहिए परन्तु हमारी कोई कमी है तो सुधार भी करना चाहिए। विरोधी के साथ भी हमें सामान्य व्यवहार ही करना चाहिए क्योंकि हमारा कार्य विरोधी से लड़ना नहीं बल्कि साधना द्वारा अपनी विकृतियों को दूर करना है। 07 नवम्बर 2021 को डायरी के अवतरण संख्या 173 पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि इस अवतरण में अन्धे व बहरे का उदाहरण देकर समझाया गया है कि हम अनजाने में क्या गलती करते है। संघ में कोई नया स्वयंसेवक या साधक आता है तो उसे आगे बढ़ाने की हमारी जो लालसा है वो जबरदस्ती उसको ज्ञान से लाद देती है, बोझ डालती है जबकि होना ये चाहिये कि उसे आगे बढ़ाने के लिए केवल इशारा या निर्देशित किया जाये और उसको अपने आप का विकास करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। किसी को जल्दी से जल्दी विकसित करने की हमारी भावना या लालसा आगंतुक का लाभ करने की बजाय हानि कर बैठती है क्योंकि प्रत्येक स्वयंसेवक या साधक की अपनी-अपनी क्षमताएं होती है। अतः उसके अनुसार हमें केवल निर्देश देना चाहिए। हम उसको रास्ता दिखा सकते है लेकिन जबरदस्ती वाली कृपा उसके आगे बढ़ने की स्वाभाविक गति को विचलित कर देती है, ऐसा नहीं करना चाहिए। पूज्य श्री ने अपने अनुभवों के आधार पर ऐसा लिखा है। अतः नये आने वाले को केवल निर्देश दें, उनकी शंका का समाधान करें एवं आगे बढ़ने में सहायक बनें। स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं के प्रत्युत्तर में उन्होंने बताया कि नए साधक को हमारी मदद केवल निर्देश के रूप में हो। अपने व्यवहार से नये स्वयंसेवक को निकट लाने का प्रयास करना चाहिए ना कि कोई जिम्मेदारी लाद कर। काम बाँटने से ही बढ़ता है लेकिन बाँटने से पहले जिसको काम दिया जा रहा है उसकी रूचि एवं क्षमता की जानकारी हो। व्यक्ति के सामाजिक भाव को सही दिशा प्रदान करना जरूरी है इसलिए संघ की बात हमारे सम्पर्क में आने वालों को जरूर करनी चाहिए तभी संघ का प्रचार होगा।

28 अक्टूबर को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'अर्चना की थाली' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि अपने आराध्य की पूजा के लिए जो सामग्री होती है जैसे पत्ते, फल, फूल, कुंकुम, चंदन, दीपक, अगरबती, धूप, श्रीफल, जल आदि सभी का अपना-अपना महत्व होता है। उसी प्रकार हमारे जीवन की भी अपनी विशिष्ट महत्ता है। हमें पूजा में चढ़ने वाली सामग्री से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को अपने आराध्य की सेवा में समर्पित करना चाहिए। इस सहगीत में पूज्य श्री के सामने समाज रूपी अपने आराध्य की पूजा के लिए अर्चना की थाली नहीं होने की स्थिति और पूजा करने की चुनौती का वर्णन किया गया है। समाज की पूजा का मतलब स्वधर्म का ज्ञान करवाकर उस मार्ग पर समाज को चलाना, कर्तव्य का ज्ञान कराना, अपने स्वरूप से परिचित कराना, संगठित करके शक्ति की स्थापना करना, संस्कार सिंचन करना एवं सच्चे क्षत्रिय का निर्माण करना है। यही समाज की पूजा है और इस तरह की पूजा के लिए पहली शर्त है हृदय में समाज के प्रति पीड़ा का होना। समाज की पूजा के लिए सामग्री एकत्रित करने में जो प्रयास किया जाता है उसमें कई प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है, कई प्रकार के आरोपों का सामना करना पड़ता है। पवित्र कार्य में कई विघ्न आते हैं जो तनसिंह जी के सामने भी आए। जो समाज का कार्य करता है लोग उसकी आलोचना एवं विरोध करेंगे ही। मजाक भी उड़ायेंगे। पूज्य श्री ने इन्हें कीचड़ के छींटे और कांटे बताया है। परंतु इनके भय से यदि इस कार्य को छोड़ देंगे तो पराजय मिलेगी। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि यदि एक बार आप ऊंचे उठ गए, लोगों की नजर में आ गए, लोगों के लिए आप सम्मानीय बन गए और यदि फिर आपने कोई ऐसा कार्य कर दिया जिससे आपकी अपकीर्ति हो गयी तो वो मरण से भी बदतर स्थिति है। अतः साधना मार्ग में बहुत ध्यान रखना पड़ता है। इसलिए हम न तो स्वयम झुकें और न ही अपनी परम्परा को झुकने देना है। समाज रूपी मंदिर को जगाते हुए निरन्तर साधना में प्रवृत रहना है। तनसिंह जी ने समाज सेवा को पूजारी की पूजा से भी बड़ा बताया है। ऐसे कार्य में दिव्य आनंद की अनुभूति होती है अतः हम भी उस दिव्य आनंद की अनुभूति करें। 05 नवम्बर को 'श्रान्त क्लान्त जागती है' पर चर्चा करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि यह सहगीत पूज्य तनसिंह जी द्वारा सन् 1968 में गुजरात के नडियाद में ओटीसी शिविर में लिखा गया था। इस गीत में पूज्य श्री कहते है कि थकी हुई, निस्तेज, मुरझाई हुई वेदना जिस प्रकार जागती रहती है वैसी ही पीड़ा मेरे हृदय में भी जगी है। त्याग व बलिदान की क्षात्र परम्परा सो गई है, मौन सी हो गई है। परमेश्वर रूपी समाज की निष्काम भाव से सेवा का भाव लुप्त प्रायः हो चुका है। ऐसी स्थिति में सभी ओर निराशा का भाव व्याप्त हो गया है। लेकिन संघ रूपी कर्म यज्ञ जब से प्रारम्भ किया है तब से समाज के लोग उसमें आहुत होकर निरन्तर उसी त्याग व बलिदान की क्षात्र परम्परा को पुनः स्थापित कर रहे हैं। संघ की कार्यप्रणाली वेदों की ऋचाओं की तरह त्रुटिहीन है। श्रीमद्भगवद् गीता के 17वें अध्याय के 24वें श्लोक में योगेश्वर श्री कृष्ण कहते है कि शास्त्र का विधान जानकर उसके अनुसार कर्म करना चाहिए। ज्ञान में कर्म का विलय करके शास्त्रानुसार, गीतानुसार संघ कार्य कर रहा है। ज्ञान के अनुसार कर्म होगा तब भक्ति भाव, समर्पण भाव उत्पन्न होगा। भक्ति में निष्काम भाव होता है। समाज की पीड़ा को दूर करने के लिए हम सभी को मिलकर इस कार्य को करना होगा तभी समाज में नवजागृति होगी। इसी से हमारे सभी कष्ट दूर होंगे।

जाति और जातिवाद विषय पर विचार गोष्ठी संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की बीकानेर टीम द्वारा शहर स्थित महिला मंडल स्कूल में सर्व समाज के सामाजिक प्रतिनिधियों की भारत की वर्तमान व्यवस्था में 'जाति और जातिवाद' विषय पर विचार संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के प्रारंभ में सभी संभागीयों को श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा इस विषय में तैयार किया गया पत्रक दिया गया जो पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक 'समाज चरित्र' व 'गीता और समाज सेवा' के उद्धरणों की सहायता से तैयार किया गया था। प्रारंभ में स्थानीय सहयोगी रामसिंह चरकड़ा द्वारा इसका वाचन किया गया एवं उपस्थित संभागीयों से इस विषय में विचार आमंत्रित किए गये। उपस्थित संभागीयों में से राजेंद्र पंवार (उपमाहापौर), डॉ नरेश गोयल, शिवराज बिश्नोई, टीकम परवानी, नेनुराम मेघवाल, सोहन लाल

चावरिया, विजय कोचर, डॉ जे. पी. कच्छावा, एडवोकेट ओम भदानी, एडवोकेट विजय गोयतान, ज्योति रंगा, पार्षद अनूप गहलोत, सरपंच हेमंत यादव, पंडित गायत्री प्रसाद, भगवान मारु, प्रीतम सेन, रवि चावला, मनम बोथरा, अशोक कुमार गोस्वामी, रवि गहलोत आदि ने अपने विचार रखे एवं बताया कि जातियां भारतीय समाज व्यवस्था का हिस्सा हैं और हमें एक दूसरे से गुणों के आधार पर जोड़ती हैं लेकिन आजादी के बाद राजनैतिक दलों व सभी समाज के स्वार्थी राजनेताओं द्वारा चुनावी फायदों के लिये जातियों में जातिवाद का जहर घोल कर विकृति पैदा कर दी है। जिसके लिये हम सभी समाजों को लगातार साथ बैठ कर विचार मंथन करना पड़ेगा और इस जातिवाद के जहर को मिटाने का प्रयास करना होगा। अंत में बताया गया कि जब तक गुणों और कर्मों की समानता बनी रहेगी तब तक जातियां रहेंगी, चाहें उनका रूप कोई भी हो। हमारे देश में जातियों को मिटाने का अव्यवहारिक प्रयोग हो रहा है और उसके परिणाम स्वरूप जातियां मिटी नहीं और जातिवाद बढ़ता जा रहा है। पूज्य तनसिंह जी ने जाति के कारण उपजे जातीय भाव को सतोगुणीय बनाकर उसको संसार के लिए उपयोगी बनाने का मार्ग बताया और श्री क्षत्रिय युवक संघ विगत 75 वर्षों से क्षत्रिय समाज के जातीय भाव को सतोगुणीय बनाने का प्रयास कर रहा है। संघ चाहता है कि सभी जातियों के सामाजिक संगठन अपनी अपनी जाति के जातीय भाव को सतोगुणीय बनाने का अभियान चलायें ताकि हम विघटन को समाप्त कर एक संगठित और श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में संसार के लिए उपयोगी बन सकें।

(पृष्ठ एक का शेष)

समारोहपूर्वक...

माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी ने जब से संघ के स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों में यह सूचना प्रसारित की है तब से सभी में उत्साह का संचार हो रहा है। सभी अपने अपने स्तर पर योजना बना रहे हैं और अपना शतप्रतिशत सहयोग देकर इस समारोह को ऐतिसाहिक बनाने की चर्चा कर रहे हैं। प्रचार प्रसार, साधनों की व्यवस्था आदि की योजनाएं बन रही है और स्वर्ण जयंती की ही भांति जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन प्रांगण में ऐतिसाहिक समारोह का संकल्प दृढ़तर होता जा रहा है।

(पृष्ठ एक का शेष)

यह छात्रावास...

स्वयं तन सिंह जी की भी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। यद्यपि वे एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे थे लेकिन कम उम्र में ही उनके पिताजी का देहांत हो गया था। अपनी और साथियों की पैसे की परेशानी हल करने के लिए यहां हॉस्टल में रहते हुए पुस्तकालय में नौकरी प्रारंभ की। सुपरिंटेंडेंट से अनुमति लेकर यहाँ खाली पड़ी जमीन पर सब्जियों की खेती की। उन्हें बाजार में बेचकर जो आय होती, उससे अपनी व साथियों की फीस भरते थे। जब उससे भी पार नहीं पड़ी तो यहां जो रईस परिवारों के बच्चे पढ़ते थे उनको ट्यूशन करवाया। रात को दर्जी के यहां जाकर दर्जी का काम भी किया। इससे उनके रतौंधी भी हो गई लेकिन उन्होंने इसे थकान मात्र ही समझा। यह सब उन्होंने अपने साथियों के लिए किया इसलिए स्पष्ट है कि उनमें तभी से प्रबल सामाजिक भाव था। उनके मन में सदैव यह भाव रहा कि मेरे आस-पास जहां कहीं भी अभाव है उसको दूर करने के लिए मैं क्या कर सकता हूं। वही भाव यहां इस 12 नंबर कमरे में पुष्पित हुआ। उन्हें अनुभव हुआ कि केवल कुछ व्यक्तियों की मदद करने से पार नहीं पड़ेगी बल्कि पूरे समाज में प्रकाश फैलना चाहिए। उसके लिए उन्होंने कार्य प्रारंभ किया तो यहीं रहने वाले कुछ साथी युवाओं का उनको सहयोग मिला, अन्य लोगों ने भी साथ देना शुरू किया। लेकिन यह स्पष्ट नहीं था कि किस प्रकार से इस कार्य को किया जाए। इसलिए जैसी उस समय पद्धति थी, जो आज भी ज्यादातर संस्थाओं की पद्धति है, कि संस्था बनती है, उसका अधिवेशन होता है, अधिवेशन में प्रस्ताव पास होते हैं और फिर बिखर जाते है। वैसे ही उन्होंने भी संस्था बनाई जिसका नाम श्री क्षत्रिय युवक संघ रखा। उसका पहला अधिवेशन जोधपुर में हुआ उस अधिवेशन के अध्यक्ष माड़साब आयुवान सिंह जी को बनाया। आयुवान सिंह जी का भी सामाजिक भाव काफी प्रबल था। दूसरा अधिवेशन 6 महीने बाद काली पहाड़ी (झुंझुनू) में हुआ जिसमें तन सिंह जी ने सौभाग्य सिंह जी भगतपुरा को अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया। इस प्रकार यह संस्था चल रही थी इसी बीच उनका ग्रेजुएशन पूरा होने पर वकालत करने के लिए नागपुर गए जहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्यालय भी था। वहां राजस्थान से गए हुए कुछ लोगों ने उनसे संपर्क किया और उन्हें शाखा में ले गए। शाखा का कार्यक्रम देखकर उनके मन में यह विचार आया कि ऐसा ही दैनिक अभ्यास का कार्यक्रम यदि संघ में भी प्रारंभ किया जाए तो समाज में निश्चित रूप से प्रभाव पड़ेगा। तत्कालीन सरसंघचालक गुरु गोलवलकर जी से उन्होंने इस पद्धति का अपने समाज के लिए प्रयोग करने के लिए अनुमति मांगी लेकिन उन्होंने यह कहकर निरुत्साहित किया कि यह काफी कठिन कार्य है, तुमसे नहीं होगा। लेकिन कुछ दिन बाद तन सिंह जी ने पुनः आग्रह किया। इस प्रकार अनेक बार पूछने पर अंत में उन्होंने कहा कि अच्छा ठीक है तुम कर सकते हो तो कर लो। तन सिंह जी ने उस समय की कार्यकारिणी के सदस्यों को वहीं से पत्र लिखा कि मैं छुट्टियों में दिसंबर में जयपुर आ रहा हूं आप लोग भी जयपुर आ जाएं। 21 दिसंबर को जयपुर में सभी इकट्ठे हुए। तन सिंह जी ने अपनी विचार बताया तो सभी साथियों ने कहा कि जब आपने ठान लिया है तो यह कार्य निश्चित रूप से सफल होगा। तब 22 दिसंबर 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना इस नए स्वरूप में हुई जिसमें प्रतिदिन शाखाएं लगती हैं, शिविर लगते हैं, पत्रिकाएं निकलती हैं, अखबार निकलता है। यह जो संघ का नया रूप 22 दिसंबर 1946 को आया उसका जो अंकुर वह इसी 12 नंबर कमरे में फूटा था। जहाँ कहीं भी कोई प्रेरणादायक चीज होती है तो वह तीर्थ स्थान बन जाता है इसीलिए हमारे लिए भी यह तीर्थ स्थान है। अभी हीरक जयंती वर्ष चल रहा है जिसके अंतर्गत अलग-अलग स्थानों पर 75 बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त जिन स्थानों पर शिविर लगे हैं या जो स्थान हमारे लिए प्रेरणादायक हैं उन स्थानों पर भी जाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए तीर्थ दर्शन अभियान भी चलाया जा रहा है। इसीलिए दीपावली के दिन पिलानी में यह कार्यक्रम किया जा रहा है। माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि तन सिंह जी का साहित्य अत्यंत विलक्षण है, उसमें बहुत गहराई है। अभी जो प्रार्थना हमने गाई - 'क्षत्रिय कुल में प्रभु जन्म दिया तो क्षत्रिय के हित में जीवन बिताऊं'। यह भी ऐसी ही गहरी है। जो क्षय से त्राण करे वही क्षत्रिय है। चाहे किसी भी प्रकार का क्षय हो, उससे बचाने में जो तत्पर रहता है, वही क्षत्रिय है। क्षत्रिय दूसरों के लिए जीता है अपने लिए नहीं। तो क्षत्रिय का हित उसके सच्चा क्षत्रिय बनने में है अर्थात जब वह दूसरों के लिए जिएगा तब उसका हित संपादित होगा। लेकिन क्या हमारी स्थिति ऐसी है? क्या हम दूसरों के लिए जीते है? आज पूरे संसार का और हमारे समाज का वातावरण क्या वैसा है? यदि ऐसा नहीं है तो कृत्रिम वातावरण बनाकर उसके माध्यम से हमें लोगों को तैयार करना चाहिए। इसीलिए शाखाएं, शिविर आदि लगाए जाते हैं। बार-बार अभ्यास के द्वारा हमारे विकारों को समाप्त किया जाता है तभी हमारा जीवन निखरता है। इस प्रार्थना में जाति की फुलवारी में पुष्प बनने की बात कही गई है इसका अर्थ है कि जो जाति के गुण हैं वे हममें आए लेकिन उनका लाभ सभी को मिले। उस पुष्प के सौरभ से जग को रिझाने की बात कही गई है। तनसिंह जी के साहित्य को पढ़कर ऐसा लगता है कि यदि इसी प्रकार हम इसका अध्ययन करते रहे और समाज में प्रसारित करते रहे तो एक दिन यह हमारे समाज का शास्त्र बन जाएगा। दिखने में यह साहित्य साधारण सा लगता है लेकिन जब उस पर विचार करेंगे, ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि कितनी गहरी बात कही गई हैं। इस गहराई में उतरने पर हमारा जीवन निखरेगा और समाज में हम निखार तभी ला सकते हैं जब व्यक्ति में निखार आएगा। कार्यक्रम का संचालन यशवर्द्धन सिंह झेरली ने किया। इस कार्यक्रम में पिलानी के आस पास के समाज बंधुओं के अतिरिक्त जैसलमेर, जयपुर, नागौर, सीकर, जालोर के स्वयंसेवक भी पूज्यश्री के इस अध्ययन स्थल के दर्शन करने पहुंचे। स्थानीय सहयोगियों ने छात्रावास के पुराने भवन के उस 12 नंबर कमरे को सजाया जिसमें पूज्य श्री रहे थे, सभी लोगों ने उस कमरे के दर्शन कर स्वयं को कृतार्थ माना।

(पृष्ठ तीन का शेष)

दीपावली...

कार्यक्रम में छात्रावास के विकास में सहयोग देने वाले पूर्व छात्रों को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में सुल्तान सिंह नागवा, श्याम सिंह छापोली, दिलीप सिंह सबलपुरा, सुरेंद्र सिंह तंवरा, सेवानिवृत्त आरएएस ईश्वर सिंह राठौड़, दयाल सिंह रोरू, राजेश सिंह हुडील, प्रदेश कांग्रेस सेवा दल के अध्यक्ष हेमसिंह शेखावत, लक्ष्मण सिंह मोहनवाड़ी, ईश्वर सिंह भारीजा सहित अनेको समाज बंधु उपस्थित रहे। नागौर जिले के खींवसर फोर्ट में 6 नवंबर को दीपावली स्नेह मिलन पूर्व मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए खींवसर ने कहा कि हमारा समाज तभी प्रगति कर सकता है जब समाज के राजनेता, सामाजिक संस्थाएं, भामाशाह आदि मिलकर समाज के हित में कार्य करें। हम अपने समाज में एकता बनाकर अन्य समाजों के साथ भी सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखें तभी समाज का सर्वांगीण विकास होगा। राजनीति भी जनसेवा का ही एक माध्यम है इसलिए राजनेता के लिए जनता का हित ही सदैव सर्वोपरि होना चाहिए। कार्यक्रम को धनंजय सिंह खींवसर, सेवानिवृत्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जयसिंह पालड़ी जोधा, मेड़ता के पूर्व प्रधान भंवर सिंह नोखा चांदावता, पूर्व सरपंच नारायणसिंह गोटन, लाल सिंह चावंडिया, देवी सिंह गोधन, बलवंत सिंह गुढ़ा भगवानदास, महेंद्र सिंह भोजास ने भी संबोधित किया। पांचौड़ी के समाज बंधुओं के आग्रह पर अगला स्नेह मिलन पांचौड़ी में रखने का भी निर्णय हुआ। नागौर के परबतसर स्थित मीरा गार्डन में चारभुजा सेवा संस्थान का दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम को पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया, भंवरसिंह पलाड़ा, संस्थान के अध्यक्ष महेशपालसिंह बड़ू, मुख्य संरक्षक किशोरसिंह राबड़ियवास, दलपतसिंह रुणिचा आदि ने संबोधित किया। इस अवसर पर प्रतिभाओं का सम्मान भी किया गया। सीकर जिले के नीमकाथाना क्षेत्र की तंवरावाटी राजपूत सभा का दीपावली स्नेहमिलन 7 नवंबर को श्री प्रताप छात्रावास नीमकाथाना में रखा गया जिसमें वार्षिक कार्ययोजना का विवरण दिया गया एवं अमरसरवाटी तंवरावाटी भोमिया संघ के ट्रष्टियों व कार्यकारिणी में आवश्यक परिवर्तनों का अनुमोदन किया गया। 7 नवंबर को ही उभेश्वर महादेव की धर्मस्थली मेवाड़ और माँ वैष्णो देवी के प्रांगण में झाड़ोल, फलासिया, बड़गाँव, गिर्वा, गोगुन्दा, सायरा के समाज बंधुओं का सम्मेलन महन्त श्री गोपालगिरी जी राजगुरु सवीना मठ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। सम्मेलन में समाज की एकता और अखण्डता की दिशा में एकजुट होकर सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगाने, शिक्षा के बेहतर अवसर प्राप्त करने की दिशा में काम करने व सर्व समाज के साथ सामाजिक सौहार्द की भावना स्थापित करने का संकल्प लिया गया। सम्मेलन को कुमार लवदेव सिंह कुराबड़, चन्द्रवीर सिंह करेलिया, फतह सिंह बिलिया, महेंद्र नाथ फलीचड़ा, राम सिंह जी खेड़ा, कुन्दन सिंह जी कच्छेर, जितेंद्र सिंह जी मायदा आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन भवानी सिंह जी झाला देवास ने किया।

अशोक कुमार तंवर ने जीता कांस्य पदक

हरियाणा के भिवानी के निवासी भारतीय मुक्केबाज आकाश कुमार तंवर (54 किग्रा) ने एआईबीए पुरुष विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया है। आकाश विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने वाले सातवें भारतीय मुक्केबाज हैं। उन्हें ब्रॉन्ज मेडल के साथ 25 हजार डालर की इनामी राशि भी मिली।

धर्मेन्द्र सिंह आंबली को मातृशोक

श्रीमती राज कुंवर बा

संघ के गोहिलवाड़ संभाग के संभाग प्रमुख धर्मेंद्र सिंह आंबली की **माताजी श्रीमती राज कुंवर बा** का 9 नवंबर को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को सबलता प्रदान करें।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक भंवरसिंह सांवराद का देहावसान

भंवरसिंह सांवराद

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं चौपासनी विद्यालय में लंबे समय तक शारीरिक शिक्षक रहे **भंवरसिंह सांवराद** का 10 नवंबर को देहावसान हो गया। आपने पहला शिविर सितंबर 1951 में जोधपुर में किया। कुल 26 शिविर किए एवं अपने समकालीन स्वयंसेवकों के निरंतर संपर्क में रहे। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए एवं परिजनों को इस आघात को सहने की शक्ति देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

संगठन के लिए वैचारिक एकता आवश्यक: सरवड़ी

(बीकानेर, जयपुर और कुचामन शहर में श्री प्रताप फाउंडेशन की चिंतन बैठकें संपन्न)

जयपुर

हमारा उद्देश्य है कि राजपूत समाज का वर्चस्व हर राजनीतिक पार्टी में रहना चाहिए। इसके लिए समाज में एकता स्थापित करने की आवश्यकता है। लेकिन केवल बातें करने से हम एक नहीं होंगे, हमारे अन्दर कई कमियाँ है उन्हें दूर करना होगा। बार-बार मिलने से, चर्चा करने से ही दूरियां कम होंगी और हम निकट आयेंगे। हमारा उद्देश्य भले ही एक हो लेकिन वैचारिक भिन्नता होगी तब तक संगठन नहीं हो सकता। हमें अपने विचारों को सामाजिक हित में जो विचार चल रहे हैं, उनमें मिला देना होगा, स्वयं के निर्णय को सामाजिक निर्णय के साथ मिला देना होगा तभी संगठन हो पायेगा

विद्याधरनगर

बीकानेर

और सुव्यवस्थित संगठन के लिए हमें सबसे पहले स्वयं को ठीक करना होगा। 31 अक्टूबर को जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में आयोजित जयपुर जिले की चिंतन बैठक को संबोधित करते हुए श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि सबसे पहले वैचारिक एकता बन जानी चाहिए। हमें इस लालच में नहीं फँसना है कि सभी हमारे साथ आएं बल्कि जो हमारे विचार के अनुसार चल सकते हों उनका आना आवश्यक है। यदि ऐसा होगा तो ही एक विचार पर, एक निर्णय पर हम सब टिक सकते हैं। पूज्य तनसिंह द्वारा रचित प्रार्थना 'मेरे सोते हुए जीवन में रणभेरी बजा देना' अभी हमने गाई। इसमें यह भाव है कि मेरे अन्दर सद्संकल्प जगे एवं उसे पूरा करने के लिए मेरे व्यक्तिगत अरमानों को यदि नष्ट करना पड़े तो करूं। पुष्प की तरह अपनी हस्ती मिटाकर समाज में अपनी सुगन्ध बिखेरनी होगी, दीपक की तरह स्वयं जलकर अन्यों को प्रकाशित करना होगा, परवाने की तरह समाज की आवश्यकता के लिए बलिदान होने को उपस्थित होना होगा। ऐसा भाव हमारे हृदय में जगे, इसके लिए हम परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं। यदि हमें राजनीतिक पार्टी में सामाजिक वर्चस्व स्थापित करना है तो उसके लिए भी तैयारी करनी होगी, पुरुषार्थ करना पड़ेगा। बिना प्रयास कभी कुछ नहीं मिलता। प्रयास करना हमारा दायित्व है, उसे निभाएं, परिणाम ईश्वर का क्षेत्र है। सच्चे क्षत्रियत्व को प्राप्त करने के लिए हम प्रयास करेंगे तो सभी समाजों के पीड़ितों के साथ खड़े होने वाले केवल हम होंगे, अन्य कोई नहीं। उसके लिए शक्ति चाहिए जो शक्ति हमें मिलकर, संगठित होकर अर्जित करनी होगी।

इस चिंतन बैठक में जयपुर जिले की सभी विधानसभा क्षेत्रों के राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। बैठक के प्रारंभ में श्री प्रताप फाउंडेशन के उद्देश्य व कार्ययोजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई एवं सभी से उनके विचार आमंत्रित किए गये। उपस्थित संभागीयों में से यशवर्धन सिंह झेरली, संजयसिंह माचेड़ी, कर्नल केशरी सिंह राठौड़, गजेंद्र सिंह मानपुरा, ललितसिंह सांचौरा, पराक्रमसिंह राठौड़, अजयसिंह चौहान, रुपेंद्र सिंह करीरी, आदित्य प्रताप सिंह झाझड़, दीपसिंह बड़ागांव, गजेन्द्रसिंह चिराणा, देवेंद्र सिंह बुटाटी, सुरेंद्र सिंह शेखावत, श्रवणसिंह बगड़ी, वीरेंद्र सिंह आसलसर, महीपाल सिंह करीरी, गौरवप्रताप सिंह लाडखानी, महेन्द्रसिंह खेड़ी, गिरीराजसिंह खंगारोत, करणवीर सिंह राजपुरा, जितेंद्र सिंह हिरनौदा, दशरथसिंह बरड़वा, मोतीसिंह सामली, अर्जुन सिंह, ओमेंद्र सिंह आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में सभी ने विधानसभा क्षेत्रवार बैठ कर आगामी बैठकों की योजना बनाई। 29 अक्टूबर को बीकानेर जिले के हर विधानसभा क्षेत्र से कुछ चुनिंदा सहयोगियों को बुलाकर बीकानेर स्थित महिला मंडल विद्यालय प्रांगण में बैठक की गई। यहां भी बैठक के प्रारंभ में श्री प्रताप फाउंडेशन के उद्धेश्य व कार्ययोजना के बारे में जानकारी दी गई। इस कार्ययोजना को धरातल पर उतारने के बारे में नरेंद्र सिंह हदां, छैलुसिंह पुंदलसर, महेंद्र सिंह भोलासर, सवाईसिंह चरकड़ा, नारायणसिंह किस्तुरिया, भारतसिंह सेरुणा, राणीदान सिंह सारुंडा, हरेन्द्रसिंह मंड्रेला, मोहनसिंह कक्कू, औंकारसिंह मोरखाणा आदि ने अपने विचार व सुझाव साझा किए। इन सुझावों में मतदान प्रतिशत बढ़ाना, राजनीतिक व सामाजिक कार्यकताओं में निरंतर संवाद बनाये रखना, श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रति दृढ़ आस्था स्थापित करना व बूथ लेवल तक श्री प्रताप फाउंडेशन का संदेश पहुंचाना, महिलाओं में मतदान के प्रति जागृति पैदा करना, तहसील स्तर पर बैठकें करना, इस संदेश को हर राजपूत मतदाता तक ओडियो विजुअल माध्यमों से पहुंचाना आदि शामिल थे। बैठक में बीकानेर के सभी विधानसभा क्षेत्रों की बैठकों का कार्यक्रम भी बना। 7 नवंबर को नागौर जिले की चिंतन बैठक कुचामन शहर स्थित करणी फोर्ट होटल में रखी गई। इस बैठक में भी माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी का सानिध्य प्राप्त हुआ। बैठक में नागौर जिले की विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों के राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। बैठक में श्री प्रताप फाउंडेशन की कार्ययोजना पर चर्चा करते हुए पूर्व विधायक मानसिंह किनसरिया, जितेंद्र सिंह सांवराद, राजेंद्र सिंह धोलिया, धनंजयसिंह खींवसर, श्यामप्रताप सिंह रूंवा, नारायणसिंह गोटन, नारायणसिंह मिंडकिया, जगदीश सिंह रायधणा, भगवानसिंह रसाल, किशोरसिंह लोरोली, बजरंग सिंह रायथलिया, दलपतसिंह रुणिचा, दुर्गसिंह खींवसर, दिनेश सिंह बरवाली, लोकेंद्र सिंह आदि ने अपनी बात कही। अंत में माननीय संयोजक महावीर सिंह जी ने कहा कि श्री प्रताप फाउंडेशन का यह पत्रक हमारे लिए राजनीति में समाज का वर्चस्व स्थापित करने का माध्यम है। हम सभी इसको पढें, इस पर मनन करें और तदनुसार आचरण करने का प्रयत्न प्रारंभ करें लेकिन यह सदैव ध्यान रखें कि हमारा वर्चस्व स्थापित करने का मतलब किसी अन्य को पीड़ित करना नहीं बल्कि जो पीड़ित हैं उनको संरक्षण प्रदान करना है और जो पीड़क हैं उनसे संघर्ष करना है। इस पत्रक में जो लिखा है उसके अनुसार हमारा चिंतन एक बैठक में नहीं बन सकता बल्कि हमें बार बार ऐसे ही मिलना होगा, साथ बैठना होगा और जिस एक लक्ष्य को हम प्राप्त करना चाहते हैं उसके अनुकूल एक ही कार्यप्रणाली को अपनाना पड़ेगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम सक्रिय हों, जैसे समझ में आता है हम हमारी इस जाति स्वरूपा मां की अर्चना प्रारंभ करें, हमारा स्वयं का अनुभव और आत्मावलोकन हमें एक मार्ग पर ले आएगा। बैठक के बाद सभी ने विधानसभा क्षेत्रवार बैठकों का कार्यक्रम बनाया। बैठक की व्यवस्था मनोहरसिंह रूपपुरा व उनके सहयोगियों ने संभाली। 12 नवम्बर को जयपुर में विद्यानगर विधानसभा के कार्यकर्ताओं की बैठक रखी गई जिसमें फाउंडेशन की कार्य योजना की विस्तार से जानकारी दी गई एवं हीरक जयंती विषयक पर चर्चा भी की गई।

नागौर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org